गाँधी का सत्याग्रह सिद्धान्त एवं वर्तमान में प्रासंगिकता

*डॉ. संजीव कुमार

शोध सारांश

गाँधी जी के अंहिसात्मक आन्दोलन और सत्याग्रह का जन्म दक्षिण अफ्रीका में ही हुआ था। स्वदेश लोटने पर भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए कई आन्दोलन किये जिसमें सत्याग्रह मुख्य था। प्रथम विश्वयुद्ध में वचन देकर भी अंग्रेज सरकार ने भारतीयों के प्रति अपने रवैये में कोई परिवर्तन नहीं किया था, इससे वे चिढ गये और सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। गाँधी ने जन आन्दोलन के रूप में सत्याग्रह में हड़ताल, उपवास, धरना, प्रार्थना सभाएँ, असहयोग, नागरिक अवज्ञा, पद–यात्राएँ आदि को शामिल किया है, किन्तु इन सबका अहिंसात्मक होना बहुत जरूरी है। गाँधी ने एक बार कहा था कि मैंने भारतीय आन्दोलन को सत्याग्रह नाम दिया है क्योंकि यह वह शक्ति है जो सत्य, प्रेम अथवा अहिंसा पर आधारित है। इसलिए आज भी गाँधी की प्रासंगिकता बनी हुई है, क्योंकि आज के दौर में भारत ही नहीं, बल्कि विश्व समुदाय को भी समझना होगा कि उनके सुझाए मार्ग पर चलकर ही एक समृद्ध, सामर्थ्यवान, समतामूलक और सुसंस्कृत विश्व का निर्माण किया जा सकता है।

महात्मा गाँधी का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में अहम् योगदान रहा। इससे पहले उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में शोषण, अन्याय एवं रंगभेद की नीति के विरूद्ध सत्याग्रह आन्दोलन किया था। इसमें उसे सफलता भी मिली। मानव इतिहास में सदा से स्थापित व्यवस्था तथा अन्याय का विरोध रहा है। अन्याय को सहन करने का एक रास्ता कायरतापन है। यह राज्य का विरोध न करना या अन्धभक्ति का रास्ता है। दूसरा तरीका निडरता है जो युद्ध व विप्लव में प्रकट होता है। किन्तु इसमें हिंसा का समावेश रहता है। गाँधी ने भारतीय स्वतन्त्रता संघर्ष में इन दोनों मार्गों को मान्यता नही दी। गाँधी जी ने जो विकल्प प्रस्तुत किया वह था सत्याग्रह।

सत्याग्रह

"सत्य पर अटल रहना ही सत्याग्रह है। सत्याग्रह असत्य को सत्य से और हिंसा को अंहिसा से जीतने का नैतिक शस्त्र है। इसका उद्देश्य धैर्यपूर्वक कष्ट सहकर, अहिंसात्मक एवं उचित तरीकों से सत्य को प्रकट करना, भूलों को सुधारना एवं भूल करने वालों का हृदय परिवर्तन करना है। सत्याग्रह एक सरल किन्तु अचूक उपाय है। ..... सत्याग्रही संसार के सम्मुख अपने उद्देश्य की शुद्धता और अपनी माँग का औचित्य सिद्ध करने के लिए कष्ट झेलने, बल्कि प्राण उत्सर्ग करने को सदा तत्पर रहता है।"[1]

2 सितम्बर, 1917 को गाँधी ने सत्याग्रह का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा था, "सत्याग्रह शारीरिक शक्ति नहीं है – यह आत्मबल है ..... आत्मा का सार तत्व सत्य है। अतः यह शक्ति सत्याग्रह कहलाती है जिसमें ज्ञान और प्रेम की लौ उजागर रहती है। यदि कोई अज्ञानतावश हमें कष्ट देता है तो हम उसे प्रेम से जीतेंगे – यही सत्याग्रह है। अहिंसा परमोधर्म अहिंसा सुप्त अवस्था में रहती है, जागृत अवस्था में अहिंसा प्रेम है, संसार प्रेममय है, और इसी से सृष्टि गतिशील है।[2]

गाँधी जी द्वारा लिखित 'ग्रीवेन्सेज ऑफ ब्रिटिश इण्डियन्स इन साउथ अफ्रीका' में अन्याय के विरूद्ध जिस शैली का जिक्र किया, उसे बाद में जाकर सत्याग्रह कहा गया। उन्होंने इसमें यही लिखा कि 'दक्षिणी अफ्रीका में हमारी शैली प्रेम से घृणा को जीतने की है। हम व्यक्तियों को दण्डित नहीं करना चाहते बल्कि सिद्धान्ततः उनके हाथों यातनाये भोगना चाहते है।[3] गाँधी ने प्रारम्भ में इसे 'पेसिव रेजिस्टेन्स' कहा और इसका अर्थ समझाया। हिन्द स्वराज में गाँधी ने लिखा है कि 'सत्याग्रह आत्मबल को अंग्रेजी में पैसिव रेजिस्टेन्स कहते है। यह शब्द उस तरीके के लिए व्यवहार में किया गया है जिसमें अपने हक पाने के लिए लोगों ने खुद कष्ट उठाया। यह शस्त्रबल का उल्टा है। मुझे जो

काम पसन्द न हो उसे मैं न करू तो मैं सत्याग्रह या आत्मबल से काम लेता हूँ। यदि सरकार कोई कानून बनाती है तो उसका सामना शरीर बल से न कर मैं उस कानून को मंजूर ही न करूं और उसे मानने की जो सजा मिले उसे खुशी से भुगत लू तो मैंने आत्मबल से काम लिया अथवा सत्याग्रह किया। सत्याग्रह में अपनी ही बलि देनी होती है।[4] सत्याग्रह का मूलमंत्र यही है कि सत्याग्रही स्वयं कष्ट उठाये, विरोधी को यातना न दे। सत्याग्रह की सफलता सत्ता द्वारा अधिकाधिक दमन के कारण भारी यातना भोगने में निहित है।[5] अपनी आत्मिक शक्ति से विरोधी पर विजय प्राप्त करे। सत्याग्रही का उद्देश्य अन्यायी को दबना नहीं होता है बल्कि उसका हृदय परिवर्तन करना होता है। सत्याग्रह सब धारों वाली तलवार है जिसका किसी भी तरह प्रयोग किया जा सकता है। जो इसका प्रयोग करता है वह दोनों का कल्याण करता है। खून की एक बूंद बहाये बिना यह दूरगामी परिणाम देता है।[6]

गाँधी के अनुसार सत्याग्रह करने वाला व्यक्ति निर्भीक होता है। उसके मस्तिष्क में भय का लेशमात्र न होने के कारण वह किसी अन्य की दासता में नहीं रह सकता। वह दूसरों के मनमाने कार्य का विरोध करता है। आवश्यकता पड़ने पर सत्याग्रह का प्रयोग शासन व समाज दोनों के विरूद्ध किया जा सकता है। कई बार समाज भी त्रुटिपूर्ण कार्य करता है। अतः व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह समाज व किसी भी तरह के अन्याय के विरूद्ध सत्याग्रह करे।[7] मार्टिन लूथर ने भी जर्मनी में अपने समाज के प्रति विद्रोह किया तथा देश को नया मार्ग बताया। गेलीलियो ने भी समाज का विरोध कर सत्य का दर्शन किया तथा असत्य धारणाओं का प्रतिकार कर वैज्ञानिक सत्य का उद्घाटन किया। कोलम्बस ने भी अपने विचारों तथा कर्त्तव्यों का दृढ़ता से वरण कर अपने ही नाविकों का सामना किया और अन्त में अमेरिका की खोज का श्रेय प्राप्त किया। अतः सत्याग्रह को चमत्कारिक उपचार के रूप में माना जा सकता है। क्योंकि इनके द्वारा व्यक्ति को भय रहित होकर स्वतन्त्र जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है।[8] इस तरह सत्याग्रह वह साधन है जिसका सत्याग्रही उन कानूनी एवं समाज में व्याप्त प्रथाओं के विरोध के लिए प्रयोग कर सकता है, जिनके निर्माण में उसकी स्वीकृति नहीं ली गई जो वह अपनी आत्मा के विरूद्ध समझता है।

गाँधी ने साधन व साध्य की अंतरनिर्भरता पर जोर दिया था। शक्ति से प्राप्त वस्तु शक्ति के बल पर ही बनी रह सकती थी। प्रेम से प्राप्त वस्तु प्रेम पर अवलम्बित थी। अतः वे मानते थे कि साध्य एवं साधन में एकरूपता होनी चाहिए तथा दोनों ही पवित्र होने चाहिए। स्थायी अच्छाई कभी भी अनैतिक साधनों से प्राप्त नहीं की जा सकती। साध्य करने के लिए साधन सदैव उचित व नैतिक होना चाहिए। अहिंसा सत्याग्रह सी व्यावहारिक अभिव्यक्ति है। अतः सत्याग्रह पूर्णतः हिंसा का विरोध करता है क्योंकि हिंसा अनैतिक है।[9] भारत में सत्याग्रह की भावना का अभाव होने के कारण ही जनता शासन के समक्ष तथा अपने सामाजिक सम्बन्धों में अन्याय एवं पाप का विरोध करने में भीरूता का परिचय देती रही है। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने आप को सार्वभौमिक सत्ता का अंश मानकर मानवीय गरिमा के लिए निरन्तर संघर्ष करना चाहिए। इसे स्वयं शारीरिक बल का प्रयोग ही नहीं करना है। अपितु हमें व्यवस्थापिका द्वारा निर्धारित शास्तियों को स्वीकार करते हुए दण्ड के लिए अपने आप को प्रस्तुत कर देना है। हमारा उद्देश्य शासन को हानि पहुँचाना नहीं है। वास्तविक उद्देश्य मात्र यह है कि हम संघर्ष के माध्यम से यह परीक्षा करना चाहते है कि यदि विरोध पक्ष सत्य पर चल रहा है तो उसकी विजय होगी अन्यथा इसके परिणाम सामने आयेगें। यह मूल रूप में सत्य की परीक्षा का मार्ग है।[10]

गाँधीजी ने सत्याग्रह को यर्थाथ शिक्षण की प्रक्रिया कहा है सत्याग्रह का प्रयोग अधिकारों की मांग मनवाने के लिए नहीं किया जाता क्योंकि अधिकारों की प्राप्ति केवल परिणाम की द्योतक है। सत्याग्रह का प्रयोग परिणामों की परवाह किये बिना भी किया जा सकता है। सत्याग्रह तथा अन्य कार्यों में मौलिक अन्तर है। क्योंकि अन्य कार्यों के परिणाम न होने से उन्हें व्यर्थ समझा जाता है तथा दुःख होता है। किन्तु सत्याग्रह में परिणाम प्राप्त हुआ अथवा नहीं, इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं रहती। यही कारण हैं कि सत्याग्रह यर्थाथ शिक्षण कहा गया है। सत्य पर बने रहने की स्थिति जो कि हमारी दृढ इच्छाशक्ति का कष्ट सहन करने के प्रशिक्षण का परिणाम है, इसका अमूल्य शिक्षण व्यर्थ नहीं जाता। सत्याग्रही के लिए उसका अनुभव एवं प्रशिक्षण सर्वकालिक एवं सर्वव्यापक है। यदि परिणाम पर ध्यान केन्द्रित किया जाय तब भी यही कहा जायेगा कि सत्याग्रह के परिणाम हमेशा समान एवं प्रायः अच्छे ही होते है। यदि इसके विपरीत परिणाम सामने आये तो उसका कारण सत्याग्रह की अपरिपक्वता न होकर सत्याग्रह करने वाले व्यक्ति की त्रुटियां ही होंगी।[11]

गाँधी के मत में सत्याग्रह, पवित्र उद्देश्यों की अहिंसक साधनों से प्राप्ति का अविरल मानवीय अध्यवसाय है। इस

प्रकार सत्याग्रह का मर्म सत्य के प्रति आस्था तथा प्रेम की रचनात्मक और क्रियात्मक शक्ति के प्रति निष्ठा में निहित है। गाँधीजी का कथन है सत्य और अहिंसा वह तना है जिस पर सत्याग्रह की असंख्य शाखाएँ पुष्पित और पल्लवित होती है।[12] सत्याग्रह में भौतिक शक्ति के प्रयोग या हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं हैं सत्याग्रही अपने विरोधी को कष्ट नहीं पहुँचाता और न ही उसके विनाश की कामना करता है। सत्याग्रह वस्तुतः विरोधी को प्रेम की शक्ति के माध्यम से जीतने का सुनिश्चित विज्ञान है। प्रेम की शक्ति को जागृत करने वाले विज्ञान के रूप में सत्याग्रह सत्य के प्रति समर्पित प्रेम का दूसरा नाम है। गाँधी के अनुसार सत्याग्रह एक ऐसा सिक्का है जिसमें एक ओर प्रेम और दूसरी और सत्य अंकित है।[13] डॉ. रामगोपाल शर्मा के शब्दों में, "गाँधी के अनुसार 'सत्याग्रह'(सत्य+आग्रह) का अर्थ है – सत्य पर अटल होकर डटे रहना।' गाँधी जी ने इसे प्रेमशक्ति या आत्मिक शक्ति भी कहा है।"[14]

सत्याग्रही की धर्म में पूर्ण आस्था होनी चाहिए। 'मुख में राम बगल में छुरी' की कहावत चरितार्थ नहीं होनी चाहिए। गाँधी के अनुसार ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण–भाव रखने वाला संसार में कभी पराजित नहीं हो सकता। सत्याग्रह में तर्क अथवा विचार के स्थान पर विश्वास को अधिक महत्व दिया गया है। सत्याग्रह में सफल हुआ व्यक्ति संतोषी होता है। संतोष ही वास्तविक सुख है। इससे अन्य मृगतृष्णा है।[15] आत्मा को शरीर से पृथक मानने की आवश्यकता है। आत्मा अविनाशी है। बौद्धिक विचार–विमर्श की अपेक्षा विश्वास के दृढ़ आधार पर आत्मा की स्थिति को स्वीकार करने की आवश्यकता है।[16] परन्तु सत्याग्रही के गुणों में यह आवश्यक है कि वह सहिष्णु हो। उसके ह्रदय में प्रेम और पूर्ण सहिष्णुता होनी चाहिए ताकि अन्य व्यक्ति बिना किसी भय के उसकी आलोचना भी कर सके। सहिष्णु होने के साथ–साथ उसे बहादुर भी होना चाहिए। गाँधी के शब्दों में 'नामर्द कभी सत्याग्रही हो ही नहीं सकता, इसे पक्का समझिये, हाँ यह सही है कि देह से दुबला–पतला आदमी भी सत्याग्रही हो सकता है। सत्याग्रही की फौज खड़ी करने की जरूरत नहीं पड़ती। कुश्ती से कला सीखने की जरूरत नहीं होती। उसने अपने मन को वश में किया कि वह फिर वनराज सिंह की तरह दहाड़ सकता है और उसकी गर्जना जो लोग उसके दुश्मन बन बैठे हों उनका कलेजा कंपा देती है।[17]

गाँधी ने प्रारम्भिक वर्षों में अपने अहिंसक आन्दोलन को निष्क्रिय प्रतिरोध का नाम दिया था, इस अस्त्र की मूल शक्ति का आभास नहीं होता। उसकी व्याख्या कमजोर व्यक्तियों द्वारा अपनाये जाने वाले अस्त्र के रूप में की जा सकने की आशंका थी। अतः उन्होंने सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध को पर्यायवाची नहीं माना। उन्होंने कहा, "मैंने निष्क्रिय प्रतिरोध और सत्याग्रह के मध्य स्पष्ट भेद किया है। जब तक मैंने सत्याग्रह के सिद्धान्त की पूर्ण तार्किक और आध्यात्मिक मीमांसा नहीं की थी, तब मैं सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध को पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयुक्त कर देता था। निष्क्रिय प्रतिरोध को कमजोरों का अस्त्र समझा जाता है। इसमें अहिंसा के प्रति नैतिक निष्ठा तथा सत्य के मध्य अक्षुण्ण समर्पण के भाव विद्यमान नहीं होते। इस प्रकार सत्याग्रह निष्क्रिय प्रतिरोध से 3 अनिवार्य सन्दर्भों में भिन्न है – सत्याग्रह कमजोर का नहीं अपितु शक्तिशाली लोगों का अस्त्र है। यह किसी भी परिस्थिति में हिंसा के औचित्य को स्वीकार नहीं करता तथा यह प्रत्येक परिस्थिति में सत्य के प्रति अडिग आग्रह को अनिवार्य मानता है।[18] सत्याग्रह सम्बन्धी ट्रांसवाल (द.अफ्रीका) के अनुभवों (1908) के आधार पर गाँधी जी ने यह सिद्ध किया कि सत्याग्रह में पराजय का कोई स्थान नहीं है। सैन्य युद्ध में दो दलों में से किसी एक दल को सफलता तथा दूसरे को असफलता मिलती है। जिसके अनेक कारण हो सकते है। किन्तु सत्याग्रह में पराजय का कारण केवल सत्याग्रही की व्यक्तिगत कमी होती है। युद्ध में हारने वाले दल की हार का अर्थ होता है उस दल के समस्त समर्थकों की हार चाहे वे स्वयं युद्ध लड़ें हो अथवा नहीं, किन्तु सत्याग्रह में स्थिति ठीक इसके विपरीत होती है।[19] सत्याग्रह सत्य के सहारे आगे बढ़ता है। वह किसी भी प्रकार के अस्त्र–शस्त्र से लैस हुए बिना भी निर्भय होकर अन्त तक प्रतिकार करता है। सत्याग्रह करने वाले को शारीरिक शक्ति के प्रयोगकर्त्ता की तुलना में अधिक साहस की आवश्यकता होती है।[20]

गाँधी के अनुसार सत्याग्रही को धन के प्रति आसक्त नहीं होना चाहिए। धन तथा सत्य परस्पर ..... विरोधी है। धन के प्रति आसक्ति रखने वाले सत्य के प्रति निष्ठावान नहीं होते। इसका अर्थ यह है कि सत्याग्रही अनिवार्यतः सम्पत्तिहीन हो।[21] सत्याग्रह के लिए सत्याग्रही को अपने परिवार का मोह त्यागना पड़ता है। यद्यपि यह अत्यन्त कठिन कार्य है फिर भी ऐसा करना पड़ता है। सत्याग्रह तलवार की धार पर चलने के समान कठिन मार्ग है।

कालान्तर में यह सत्याग्रही के परिवार के लिए भी हितकर सिद्ध होगा, क्योंकि सत्याग्रही के परिवार के लोग सत्याग्रह की महत्ता को जान पायेगें। सत्याग्रही को यातनाओं से कभी विचलित नहीं होना चाहिए। सम्पत्ति का नाश अथवा कारावास कोई भी कारण उसे परिवार के प्रति चिन्तित नहीं करेगा, क्योंकि सच्चा सत्याग्रही ईश्वर के इस विधान में विश्वास करता है कि जिसने व्यक्ति को दांत दिये है, वही उसे खाने को अन्न भी देगा।[22]

सत्याग्रह की विभिन्न प्रणालियां हैं, इसकी तकनीके बहुमुखी हैं। सबसे पहले सत्याग्रही समस्या का विवेचन करता है अर्थात् सावधानीपूर्वक बिना किसी पूर्वाग्रह के शिकायत का अध्ययन करता है। वह यह भी देखता कि शिकायत करने वाला स्वयं इस शिकायत को दूर करने के लिए आतुर है या नहीं। सत्याग्रही का कर्त्तव्य है कि वह पहले अन्यायी को समझाए–बुझाए। समझाने–बुझाने के सारे प्रयासों में असफल हो जाने के बाद वह जिस अन्याय के विरूद्ध मोर्चा लेना चाहता है उसका आवश्यक प्रचार प्रारम्भ करता है। प्रचार के साथ–साथ वह उन सभी तत्वों का ध्यान रखता है जो अन्याय के शिकार हैं। सत्याग्रह आन्दोलन छेड़ने से पहले सत्याग्रही पीड़ित अथवा शोषित पक्ष को भी अपने पक्ष में लेने का प्रयत्न करता है ताकि शोषक और शोषित के बीच कोई समझौता हो सके। सत्याग्रह आन्दोलन में गोपनीयता का अभाव रखा जाता है। सत्याग्रही विरोधी का आदर करते हुए चलता है। उसका उद्देश्य विरोधी को नीचा दिखाना नहीं होता, क्योंकि उसे नीचा दिखाने से वह कभी भी उसमें सहानुभूति की चेतना जागृत नहीं कर सकता।

सत्याग्रही बुराई का विरोध करता है व्यक्ति का नहीं। आत्मपीड़न सत्याग्रह का प्रमुख नियम है जिसके माध्यम से वह विरोधी पर विजय प्राप्त करता है, पर आत्मपीड़न इतना तीव्र नहीं होना चाहिए कि विरोधी के टूटने के पहले ही सत्याग्रही अन्दर से टूटने लगे, क्योंकि यह तो आत्महत्या होगी। यदि ऐसी स्थिति आ जाये तो सत्याग्रही को केवल साधारण अहिंसक प्रतिरोध ही करना चाहिए। सत्याग्रह आन्दोलन में अन्तर्रात्मा की आवाज का विशेष महत्त्व है। सत्याग्रही को नैतिक युद्ध की सारी चालों की जानकारी होनी चाहिए। सहिष्णुता उसमें कूट–कूटकर भरी होनी चाहिए। महात्मा गाँधी ने समय–समय पर सत्याग्रह अस्त्रागार से नये–नये अस्त्र दिये, जिन अस्त्रों का प्रयोग किया उनमें असहयोग नाम अस्त्र प्रमुख है। यह असहयोग हड़ताल, सामाजिक एवं आर्थिक बहिष्कार, धरना, नागरिक अवज्ञा, हिजरत, उपवास आदि साधनों के माध्यम से किया जाता है।[23]

वर्तमान में प्रासंगिकता

गाँधी ने स्वीकार किया कि सत्याग्रह के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और अन्तर्राष्ट्रीय किसी भी प्रकार की समस्या का समाधान किया जा सकता है। किन्तु उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सत्याग्रह किसी भी कार्य के लिए नहीं किया जा सकता है। यह केवल न्याससम्मत और उचित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ही किया जा सकता है। गाँधी ने कहा कि सत्याग्रह के माध्यम से व्यक्तिगत हितों की पूर्ति की अपेक्षा करना अनुचित है।[24] सत्याग्रह एक जीवन्त शक्ति है। यह पशुबल पर आत्मबल की विजय है। यह बुराई को भलाई से, घृणा को प्रेम से और अत्याचार को कष्टों के प्रति अक्षुण्ण सहिष्णुता से जीतने का मन्त्र है। डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने सत्याग्रह की प्रभावशाली शक्ति का चित्रण करते हुए लिखा है "सत्याग्रह सादा परन्तु प्रभावी, दिव्य किन्तु क्रियात्मक, अत्यन्त किन्तु सार्वलौकिक है। यह एक गुप्त शक्ति नहीं, अपितु एक खुला रहस्य है। यह कोई जादू नहीं, अपितु एक आश्चर्य है। यह कोई रहस्य नहीं अपितु एक करिश्मा है। यह कोई तन्त्र नहीं, अपितु एक मन्त्र है। यह कोई अविष्कार नहीं, अपितु स्फरण है।[25]

आज आतंकवाद, परमाणु युद्ध के खतरे, पर्यावरणीय क्षरण, जलवायु में गुणात्मक बदलाव, अन्यायपूर्ण और तेजी से फैलता भूमण्डलीकरण, उदारवादी आर्थिक नीतियों से निकलने वाले नतीजे, बढ़ती हुई गरीबी, गैर–बराबरी और प्रजातन्त्रात्मक राज्य प्रणालियों में भी नागरिक अधिकारों का सिमटना आदि बड़े सवाल दुनिया के सामने है। लेकिन इसका सर्वथा जवाब नहीं दिया जा सकता कि क्या सत्याग्रह इन सवालों के लिए प्रासंगिक है क्योंकि सत्याग्रह अपने आप में एक .....सिद्धान्त है। आज की स्थिति में सत्याग्रह की प्रासंगिकता के बारें में तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए। पहला गाँधी जी ने क्या कहा था, "मैंने सत्याग्रह विज्ञान को पूरी तरह से स्थापित नहीं किया, इसमें परिष्कार और सुधार की बहुत गुंजाईश है।" उन्होंने कहा था, "सत्याग्रह इज साइंस इन द मेकिंग" गाँधी जी ने जितने भी प्रयोग किये वे 'लेबोरेट्री एक्सपेरिमेन्ट्स' थे जो कि अब बड़े पैमाने पर करने पड़ेंगे, इसलिए गाँधी के सत्याग्रह की परम्पराएं काफी नहीं होंगी। दूसरा सत्याग्रह और अहिंसा स्वयं में साधन भी है और साध्य भी, जिनको

अल्पकालीन और दीर्घकालीन उपयोगिता ही तुरन्त इस्तेमाल के लिए 'सत्याग्रही दृष्टिकोण' अंतर्द्वद्वों को दूर करने के लिए उपयोगी हो सकता है, सत्याग्रह का हथियार व्यवस्था की बुराइयों और विकृतियों का असर कम करने में भी इस्तेमाल कर सकते है। तीसरा गाँधी के प्रयोगों को परिस्थितियों के अनुसार दोहराया जा सकता है लेकिन सत्याग्रह आज की सभ्यता और समाज में निहित बुराइयों और कमजोरियों व समस्याओं को स्थाई रूप से दूर नहीं कर सकता है। आधुनिक औद्योगिक सभ्यता और राज्य सत्ता केंद्रित समाज में निहित हिंसा के लिए सत्याग्रह उपयोगी नहीं है। यह व्यवस्था परिवर्तन का अस्त्र है, जिसके द्वारा इस सभ्यता का विकल्प और नए समाज की रचना का प्रयास किया जा सकता है।

सत्याग्रह एक प्रयास है, एक प्रक्रिया है जिसके असरदार होने में समय लगता है। गाँधी जी ने माना था कि संघर्ष के लिए साधारण व्यक्तियों को शान्तिपूर्ण ढंग से और अहिंसात्मक तरीकों से बुराइयों, शोषण और सत्ता के विकेन्द्रीकरण के बुरे नतीजों से जूझने के लिए प्रशिक्षण की जरूरत है। उसी तरह जैसे हिंसक लड़ाई के लिए सिपाहियों को प्रशिक्षित किया जाता है। यह प्रशिक्षण थोड़ा बहुत तो शिविरों और संस्थाओं में दिया जा सकता है लेकिन रोजमर्रा के अन्याय के विरोध में किये गए छोटे और बड़े संघर्ष सत्याग्रह के स्कूल और महाविद्यालय है। ऐसे संघर्ष नए समाज को बनाने की जमीन तैयार करते है और इन्हीं प्रयासों के बीच से नेतृत्व भी निकलता है। सत्याग्रह की हजारों छोटी–बड़ी लड़ाइयां चाहे वे सफल या असफल हो, नया समाज बनाने की तरफ एक सार्थक कोशिश है।

सत्याग्रह की प्रासंगिकता को और गहराई से समझने के लिए आंतकवाद का उदाहरण ले सकते है। सत्याग्रह आज की स्थिति में आंतकवाद की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रासंगिकता भी नहीं और सक्षम भी नहीं है। आज उदारीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने हमारी सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था की चूले हिलाकर रख दी है। इसलिए गाँधी के सत्य के प्रयोग का एक और अवसर हमारे सामने है। हम चाहे तो गाँधी आज भी हमारे साथ चलने को तैयार है। हमें यह भी याद रखना होगा कि गाँधी मार्ग पर चलने के लिए हमें बहुत कुछ जोड़ना है, वरन अपना बहुत कुछ छोड़ना है। अपने आपको हल्का करना है।

***सहायक आचार्य**
इतिहास विभाग
से.ने.म.टी.राजकीय स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय,
झुंझुनूं (राज.)

संदर्भ सूची

1. चाँदीवाला, बृजभूषण, "गाँधी जी की दिल्ली डायरी" प्रथम खण्ड, दिल्ली स्मारक निधि, 1969 पृष्ठ–71
2. पाण्डे, बी.एन., इण्डियन नेशनलिस्ट मुवमेन्ट, 1885–1947, ए सलेक्ट डोक्युमेन्टस मैकमिलन कं. ऑफ इण्डिया लिमिटेड, दिल्ली, 1979, पृ. 49
3. दि पब्लिकेशन्स डिविजन, मिनिस्ट्री ऑफ इन्फोरमेशन एण्ड ब्रोडकास्टिंग गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, 1958–89 भाग–6, पृ.–48
4. गाँधी, मोहनदास कर्मचन्द : हिन्द स्वराज्य, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 1951 पृ.–84–85
5. यंग इण्डिया, मई 1930
6. गाँधी मोहनदास कर्मचन्द : हिन्द स्वराज्य, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली 1951 पृ.–79
7. कालेलकर, काका साहब, गाँधी संस्मरण और विचार, हिन्दी साहित्य.कॉम, 1968, पृ. 458
8. गाँधी, महात्मा : दी कलेक्टेड वर्क्स, खण्ड–8, पृ.–71–92

9. राय, डॉ. सत्या एम., भारत में उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद, हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय नई दिल्ली, 2006 पृ.–242
10. गाँधी, महात्मा : दी कलेक्टेड वर्क्स खण्ड 8, पृ.–458–59
11. वहीं, खण्ड–09, पृ.–84
12. वहीं, खण्ड–09, पृ.–08
13. वहीं, खण्ड–17, पृ.–153–54
14. शर्मा, रामगोपाल : भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर, 1995 पृ.–187
15. गाँधी, महात्मा : दी कलेक्टेड वर्क्स, खण्ड–9, पृ.–227
16. वहीं, पृ.–244
17. प्यारेलाल द्वारा उद्धृत, महात्मा गाँधी, दि लास्ट फेज, नव जीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद, 1956 पृ. –312
18. कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी, खण्ड 16, पृ.–509
19. वहीं, पृ.–224
20. वहीं, पृ.–225
21. वहीं, पृ.–225–26
22. वहीं, पृ.–226
23. भट्टाचार्य, प्रभात कुमार : गाँधी दर्शन, कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर, 1972–73 पृ.–87–104
24. चतुर्वेदी, मधुकर श्याम, प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक हाऊस, जयपुर, 2009 पृ.–298
25. गुप्त नरेन्द्रनाथ गाँधी और गाँधीवाद, हिन्द किताब महल, बम्बई, 1948 भाग–1, पृ.–102–3